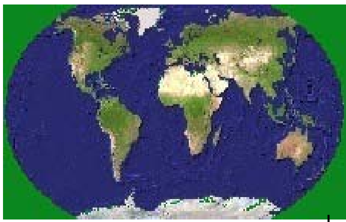

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 10, 405-407
Oct 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 5.742

डॉ. नलिनी टेंभेकर
सहयोगी प्राध्यापक, शासकीय
विदर्भ ज्ञान विज्ञान संस्था
अमरावती

Correspondence
डॉ. नलिनी टेंभेकर
सहयोगी प्राध्यापक, शासकीय
विदर्भ ज्ञान विज्ञान संस्था
अमरावती

नागपूर शहर में भोसला शासन कालीन मंदिर (1740–1860)

डॉ. नलिनी टेंभेकर

सारांशः– मंदिर यह किसी भी प्रदेश की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर होते है और उस प्रदेश की परंपरा को जतन करते है। नागपूर शहर में भोंसले शासन काल मे अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ।
देवगांव की सन्धी के अनुसार 1803 में भोंसले शासन के कामकाज का निरिक्षण करने के लिए अंग्रेजो ने एलफिस्टन नामक अधिकारी को भोंसला दरबार में भेजा। एल्फीन्स्टन अपने साथ बिचौलिए के तौर पर विनायक औरगांबादकर नामक व्यक्ति को ले गया था। उसने अपने हस्तलिखित डायरी मे 98 छोटे–बडे मंदिरोंकी सुची दी है। इनमेसे अधिकांश भोसले शासकों द्वारा निर्माण किए गये है। कुछ धनी व्यक्तियोंद्वारा और कुछ सरदारोंद्वारा बनाएँ गये है। इनमे 54 शिवमंदिर, 24 मारूती मंदिर, 06 विठ्ठल–रूखमाई मंदिर, 02 मुरलीधर मंदिर, 03 लक्ष्मी नारायण मंदिर, 04 गणेश मंदिर और अन्य कुछ मंदिर शामील है। इनमे से अधिकाश आज भी विद्यमान है और नागपूरी शिल्प के प्रतिक है।

कूट शब्दः भोंसले, मंदिर, शिखर, गर्भगृह, सभामंडप, अंतराल, शिल्प, नागपूर, शिवमंदिर, शिवलिंग

प्रस्तावना
नागपूर यह भारत का मध्यवर्ती शहर है। यह महाराष्ट्र में विदर्भ प्रदेश में स्थित हैं और महाराष्ट्र की उपराजधानी कहलाता हैं। मध्यकाल में मराठा शासन काल में यह भोसला शासन का केंद्र रहा। भोसले मराठा राज्य में प्रमुख सरदार थे और मराठा राज्य के मुख्य आधार स्तभों में से एक थे। नागपूरकर भोंसलाओं का मुल पुरूष परसोजी था। इ.स. 1707 में संभाजी का पुत्र छत्रपती शाहू ने "सेना साहेब सुभा" यह खिताब देकर "बरार–गोंडवणा" प्रांत की वतनदारी दी। परसोजी के मृत्युपश्चात (1709) क्रमशः कान्होजी भोसला, रघुजी प्रथम (1738) जानोजी भोंसला (1761) रघुजी द्वितीय (1988) यह सेना साहेब सुभा रहे।[1]
भोंसले शासन काल के पूर्व नागपूर में गोंड शासकों की सत्ता थी। गोंड वंश का मुल पुरूष जातबा देवगड का (मध्यप्रदेश) शासक था। नागपूर उसके राज्य का एक परगणा था। बख्तबुलंद (1686–1709) यह इस वंश का सबसे प्रभावशाली व्यक्ती था। इसने राजापूर बारसा नामक बारह बस्तीयों को एकत्रित कर नागपूर नगर का (1702) निर्माण किया। उसके पूत्र चाँद सुल्तान ने (1709–1735) ने नागपूर का विकास किया। उसकी मृत्यू के पश्चात अंतर्गत संघर्ष के चलते चाँद सुल्तान की विधवा राणी रतनकुँवर ने रघुजी प्रथम से बख्तबुलंद के दासी पूत्र वलिशहा के विरूध्द सहायता माँगी और देवगड की सन्धी के तहत (2 फरवरी 1039) उसे अपने राज्य का तिसरा (नागपूर एवम भंडारा प्रांत) हिस्सा दिया। इसके पश्चात रघूजी प्रथम के नागपूर को केंद्र बनाकर पूर्व की ओर बंगाल तक अपने राज्य का विस्तार किया। रघुजी द्वितीय (1788 से 1816) के शासन काल में भोंसल राज्य अपने उत्कर्ष पर था। इस समय भोंसला शासन उत्तर में नर्मदा से दक्षिण में गोदावरी तक पश्चिम में बरार से लेकर पूर्व के सागर तट तक फैला था। रघुजी द्वितीय के शासन काल में शांती और संपत्ती को प्रचुरता होने की वजह से अनेक मंदिरो का निर्माण हुआ।[2]

व निम्नलिखित हैं।

1) सक्कदरा स्थित लक्ष्मी नारायण मंदिर – द्वितीय रघूजी भोंसेले ने इस सुंदर एवं भव्य देवालयका 1786 में सक्करदरा नामक जगह पर निर्माण किया। तीन साल पश्चात निर्माण कार्य पुरा हुआ। सप्टेंबर 1787 में लक्ष्मीनारायण व गरूड की संगमश्वरी प्रतिमाँए पूना से मँगाई गई। मंदिर पूर्वमुखी एंव आयताकार (23.60 मी ग 8.20 मी) हैं मंदिर गर्भगृह चौरस (3.6 मी ग 3.6 मी) होकर साडे तीन फूट चबुतरेपर लक्ष्मी नारायण की प्रतिमाएँ स्थापित हैं। दोंनो कोणो में गणेश एंव मारूती की प्रतिमा स्थापित हैं। गर्भगृह के दोनो ओर दो कक्ष हैं। उनमें से एक कक्ष में विठ्ठल –रूक्मिणी इ.स 2000 को प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। गर्भगृह में प्रकाश आने मे लिए चारों ओर झरोखे हैं। गर्भगृह के आगे पत्थर के स्तंभो पर स्थापित समतल छत वाला मंडप हैं। उसके दोनो पत्थर की जालियाँ लगी है। रघुजी द्वितीय इस मंडप के आगे 32 लकडी के स्तंभो पर खडा एक स्वतंत्र सभा मंडप बनाया था। मंदिर पर शिखर और उपशिखर हैं। जो ओरिसा के मंदिर शिखरों की याद दिलाते हैं। नागपूर का यह प्रसिध्द मंदिर हैं।[3]

लक्ष्मीनारायण मंदिर के आगे छोटा गरूडेश्वर मंदिर हैं। मंदिर में एक मिटर उँची गरूडेश्वर की संगमरमर की प्रतिमा हैं मंदिर के दोनो ओर नाजुक पत्थर की जालियां हैं।

2) कल्याणेष्वर षिव मंदिर तेलंगखेडी :– द्वितीय रघुजी की माता चिमाबाई ने 1794 में इस महादेव मंदिर का निर्माण किया। यह काले पत्थर से निर्मित होकर उत्तर एंव दक्षिण ऐसे दोनो दिशाओं से प्रवेश द्वार हैं। यह इस मंदिर भी विशेषता हैं। मंदिर पर मध्य भारत शैली का प्रभाव हैं।[4]

3) संगमेष्वर महादेव मंदिर :– सीताबर्डी पर नागनदी और एक नाले का संगम हुआ हैं। (बँक ऑफ महाराष्ट्र के पिछे) इस नदी के संगम पर 1789 में रघूजी की माता चिनाबाई ने महादेव मंदिर का निर्माण किया। इस मंदिर के जोते पाच फीट उंचे होकर उस पर 7. 60 मी ग 7.60 मी आकार का चबुतरा हैं। मंदिर की उँचाई 9.10 मी. हैं।[5]

4) महादेव मंदिर इंदुलीबाग :– इंदूली उद्यान तयार करणे के पश्चात रघूजी के पिता मुधोजीने यहाँ महादेव मंदिर का निर्माण किया। परंतु 30 मार्च 1788 में इस मंदिर में महादेव की स्थापना दुसरे रघुजी व्दारा की गयी। इस प्रसंग पर माता चिमाबाई, बंधु खंडोजी, रघुजी उपस्थित थे।[6]

5) महादेव मंदिर मोतीबाग :– मोतीबाग के शिवमंदिर का निर्माण रघुजी व्दितीयने 1794 में पूर्ण किया। 21 ऑगस्ट 1794 मे इस मंदिर में शिवलिंग स्थापित किया गया। इस प्रसंग पर रघुजी व्दितीय, व्यंकोजी , माता चिमाबाई और दुसरे सरदार उपस्थित थे।[7] काले पत्थर से निर्मित इस मंदिर में शिवलिंग के पिछे गणेश, नाग एवं अन्नपूर्णा की प्रतिमाएँ स्थापित है।

6) षिवमंदिर गणेष पेठ :– शुक्रवार तालाब के किनारे लाल पत्थर का यह शिवमंदिर रघुजी व्दितीय ने 1794 मे बनाया। मंदिर के गर्भगृह पर अष्टकोनी घुमट है। शिवलिंग एवं नंदी संगमरमर के है। मंदिर पर बारीक नक्काशी है।

7) केलीबाग मंदिर परिसर :– व्दितीय रघुजी के महल के पास ही केलीबाग मंदिर परिसर है। इसमें दाएँ ओर शिवमंदिर एवं बाएँ ओर लक्ष्मीनारायण मंदिर है। दोनो मंदिर शिखर ओरिसा शैली में होकर नाजुक नक्काशी की गयी है। सभामंडप नक्काशीदार है। दोनो मंदिर लाल पत्थर से निर्मित होकर शिखर 19.5 मिटर उँचा है। बाएँ ओर गणेश मंदिर है। आजुबाजु रिध्दी–सिध्दी की प्रतिमाएँ है। सभी प्रतिमाएँ संगमरमरकी है। गणपती के वाहन मुषक की बडे आकार की मुर्ती काले पत्थर की है। दाएँ ओर हनुमान जी की काले पत्थर की प्रतिमा है। इन मंदिरों का निर्माण रघुजीने 1791 के बाद बालाबाई के महल के निर्माण के साथ किया होगा।[8]

8) वेणूगोपाल मंदिर तुलसीबाग :– नाग नदी के किनारे तुलसीबाग में दुसरे रघुजीने वेणुगोपाल ने भव्य मंदिर का निर्माण 1792 मे किया। मंदिर नक्काशीयुक्त है। गरूड एवं मारूती की मूर्ती संगमरमर पत्थर की है।

9) तालाब किनारे का गणपती :– मुधोजी भासेले ने फरवरी 1788 मे गणपती की नयी मूर्ती की मंदिर में प्रतिष्ठापना की ''सेनाधुरंधर" इन्होने गणपती प्रतिमा तयार करवाई जो इन्सान के मस्तक तक उंची है।'' प्रतिमा सुंदर एवं सुडौल है। माघ शुध्द 23 को मूर्ती की उत्तराभिमूख स्थिती में स्थापना की गई।[9]

10) विठ्ठल–रूखमाई मंदिर :– यह मंदिर महल नामक स्थानपर राम मंदिर के पिछवाडे में है। मुधोजीने 1783 में इसका निर्माण किया। मंदिर गर्भगृह 3.80 चौ.मी. आकार का है। प्रकाश आने के लिए दो झरोखे है। सिंहासन का चबुतरा है। विठ्ठल रूखमाई भी प्रतीमाएँ संगमरमर के पत्थर भी दो फिट उँची है। आगे अंतराल है। चालीस लकडी के स्तंभो पर आधारित 3.35 मी. चौडा और 7.30 मी लंबा सभामंडप है। इस मंदिर की छत समतल होकर निचे किया गया निर्माण काले पत्थर का है। बाहर से इंटो व्दारा शिखर का निर्माण किया है। उस पर शिल्पाकृती है।
इस मंदिर का निर्माण रघुजी के समय हवेली विभाग का प्रमुख जगदेवराव इसने किया ऐसा श्री. दे.गो. लांडगे कहते है।[10] परंतु यह मत सही नही है। इसका निर्माण रघुजी व्दितीय के काल मे हुआ इसकी पुष्ठी हेतू 6 मे 1789 में मल्हारजी नाईक वोरपे लिखते है। ''शुक्रवार तालाब के करीब विठोबा के मंदिर में वसंत पुजा शुरू की। मातोश्राी चिमाबाई, मातोश्री कमलजाबाई, श्रीमंत सेनाबहादुर इन्होने ब्राम्हणों की पूजा की, चिमाबाईने ब्रामहणों के पैर धोये।[11]

11) नागेष्वर मंदिर :– महल परिसर में अभ्यंकर पुतले के पिछे हनुमान खिडकी अथवा मारूती का मंदिर और प्रसिध्द नागेश्वर मंदिर है। मारूती मंदिर प्रथम रघुजी के काल से है। नागेश्वर मंदिर की स्थापना दुसरे रघुजी के समय 1791 में की गयी। यह मंदिर दुसरे रघुजी की माता चिमाबाई ने बनाया।[12] यह काले पत्थर से बनाया गया मजबूत मंदिर है। शिखर पर चार दिशाओं में चार सिंह हैं। नंदी काले पाषाण से निर्मित और अलंकृत है।

12) पातालेष्वर मंदिर :– नये राजमहल के आगे सराफ की दुकानों का निर्माण कार्य होते समय पायवे से महादेव की प्रतिमा निकली। रघुजीने वहीं पर मंदिर बनाया यह मंदिर जमीन में धंसा होने से पातालेश्वर कहलाया।

13) रूक्मिणी मंदिर क्षेत्र :– शुक्रवार तालाब से तिलक पुतले के सामने से शुक्रवार दरवाजे की तरफ जाते समय रूक्मिनी मंदिर पडता है। इसका निर्माण रघुजी तृतीय ने किया। यह उनक प्रेम का प्रतीक माना जाता है। उनकी नाटकशाला (रखैल) रखमाबाई उर्फ रूक्मिणी एक स्त्री थी उसके लिए रघुजी इस मंदिर को बनाया।[13] यह मंदिर भोंसले महल का हिस्सा था। कुल तीन परकोटों में स्थित इस क्षेत्र के दो भाग है। प्रथम भाग में शिवमंदिर और दुसरे भाग में लक्ष्मीनारायण मंदिर है। इस मंदिर के लिए लाल पत्थर का प्रयोग किया है। संगमरमर को भी प्रयोग मंदिर निर्माण में किया गया है।

अ) षिवमंदिर (रघुराजेष्वर) :– तिसरे रघुजी के नाम से इस मंदिर का नाम रघुराजेश्वर पडा है। गर्भगृह साढे आठ फिट चौरस होकर उसमे तीन रंग की संगमरमर की ''रघुराजेश्वर'' नाम से प्रसिध्द शिवलिंग है। शिवलिंग के पिछे नाग, गणपती, अन्नपूर्णा की प्रतिमाएँ है। गर्भगृह की बाहरी बाजू शिखर तक शिल्पकृतीयों से अलंकृत है। बाएँ ओर गणपती और मारूती मंदिर है।

ब) लक्ष्मीनारायण मंदिर :– परकोट के अंदर स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर का सभामंडप 23 लंबा फिट और 16 फिट चौडा है और 28 लकडी के खम्बोंपर आधारित है। फीट का अंतराल है। 8 ग 8 फिट चौरस गर्भगृह में काले सिंहासन पर पौने तिन फिट उंची सफेद संगमरमर की लक्ष्मीनारायण की मूर्ती विलोभनीय हैं अंतराल और गर्भगृह के बाहय भाग में शिखर तक शिल्प अलंकृत है। लक्ष्मीनारायण प्रतिमा के सामने सफेद संगमरमर की जालीदार वास्तू में नाग पर आरूड गरूड प्रतिमा है।[14]

14) मुरलीधर मंदिर (सोनेगांव) :– सोनेगांव बगीचे में यह मंदिर तिसरे रघुजी ने बनाया। 10 लकडी के खम्बोंपर आधारित सभामंडप है। बाहर के वऱ्हांडे में भी 10 लकडी के शिल्पीत खंबे है। आठ खम्बों पर आधारित अंतराल है। गर्भगृह में उंच सिंहासन पर वेणू हा मे लिए श्रीकृष्ण भी संगमरमर की ढाई फिट उची मूर्ती है। दोनो

बाजू में सत्यभामा और रूक्मिणी की मोहक मुतीयॉं है। सभामंडप में गरूड की संगमरमर की हाथ में कमलपुष्प लिए हुएँ प्रतिमा है।

15) मुरलीधर मंदिर (पारडी) :– पारडी का मुरलीधर मंदिर 1840 मे तिसरे रघुजी ने बनाया। मंदिर पूर्वमुखी होकर लाल–सफेद और काले पाषाण से बनाया गया है। मंदिर रचना गर्भगृह, अंतराल, गुढमंडप ऐसी है। गर्भगृह में एक मीटर उचे भद्रपीठ पर मुरलीधर प्रतिमा स्थापित है। अंतराल में चार स्तंभ है। मंदिर के जंघाभाग पर दोहरा शिल्पपट है। उसपर विविध देवताओं की प्रतिमा अंकित है। मंदिर शिखर आकर्षक है। शिखर पर शुकनास नहीं है।

निष्कर्ष :– रघुजी प्रथम के ओरिसा और बंगाल पर सैनिकी अभियान की वजह से और अर्धशतक तक भोंसले की सत्ता ओरिसा पर रहने के कारण नागपूर के मंदिर शिखरोंपर ओरिसा शिल्पशैली का प्रभाव दिखाई देता है। इसे '' नागपूर शिल्प'' के नाम से पहचान मिली है।

नागपूर षिल्पषैली की विषेषताएॅं:–
1. जुडाई के लिए इंटो और चुने का प्रयोग न कर पत्थर के शिखरों का निर्माणं।
2. निचे से उपर की ओर पतले होते गए शिखर।
3. गर्भग्रह पर त्रिरथ कल्पना ने शिखर।
4. शिखर रचना पर ओरिसा शिल्प का प्रभाव, गरूड मंडप पर मध्य प्रदेश शिल्प का प्रभाव।
5. शिखर के आखिरी छोर पर छोटे शिखर।
6. सभामंडप भी छत समतल और उसके चारो ओर दिवार।
7. अंतराल पर बैठा हुआ शुकनास, शुकनास पर नक्षीसहित उरःशृंगे और जाली।
8. नागपूर के शिवमंदिर के कार्यगृह में शिवलिंग के पिछे नागदेवता, दाए ओर अन्नपुर्णा और बॉए ओर गणपती।
9. नागपूर भी गणेश प्रतिमाएँ साधारण तौर पर दायी सुंडवाली हैं।
10. बडा मंदिर परिसर, फल फुलो के उद्यान और पाणी की उत्तम व्यवस्था बडे कुँऐ, तालाब और निसर्ग के सानिध्य में मंदिरो का निर्माण किया गया हैं।[15]

संदर्भ ग्रथंसुची :–

1. काले या.मा. नागपूर भोसल्याचा इतिहास (मराठी), विदर्भ संशोधन मंडल, नागपूर वर्ष 1979 द्वितीय आवृत्ती, पृ 260
2. अंधारे भा.रा., सोनटक्के श्रीकांत आधुनिक नागपूर (1854–2002) विश्वभारती प्रकाशन प्रथम आवृत्ती 2014, नागपूर, पृष्ठ क्रमांक– 18 से 20
3. पाठक अ.श.–महाराष्ट्र राज्य गॅझेटिअर नागपूर जिल्हा भाग–2, मुंबई महाराष्ट्र शासन–2005ए पृष्ठ–270–271
4. अंधारे डॉ.भा.रा. पाऊले चालती इतिहासाची वाट (मराठी) विश्वभारती प्रकाशन नागपूर72009 पृष्ठ क्र.83
5. टेंभेकर न.खे. पूर्व विदर्भातील ऐतिहासिक व प्रेक्षणीय स्थले (मराठी) पिंपलापूरे प्रकाशन, नागपूर 2010, पृष्ठ–143
6. शेजवलकर त्र्य.श. नागपूर अफेअर्स– भाग 1 डेक्कन कॉलेज प्रकाशन पुणे, 1954–पृष्ठ–295–296.
7. अंधारे भा.रा.– दुसरे रघुजी भोसले (1788–1816) (मराठी) विश्वभारती प्रकाशन, नागपूर 2002, पृष्ठ–143
8. पाठक अ.श. महाराष्ट्र राज्य गॅझेटिअर नागपूर जिल्हा भाग–2, मुबंई महाराष्ट्र शासन–2005 पृष्ठ–272
9. शेजवलकर त्र्य.श. नागपूर अफेअर्स–भाग 2 डेक्कन कॉलेज प्रकाशन पुणे 1959–पृष्ठ 91
10. लांडगे दे.गो–नागपूरचा सांस्कृतिक इतिहास मध्यप्रदेश संशोधन मंडल–1954 पृष्ठ–118
11. शेजवलकर त्र्य.श. वहीं–भाग–2 पृष्ठ 188
12. अंधारे भा.रा–भोसले कालीन नागपूर (मराठी) विश्वभारती प्रकाशन नागपूर72001 पृष्ठ क्रमांक –163
13. देशपाडे य.खु विदर्भातील ऐतिहासिक लेखसंग्रह–1959–लेखांक 117, पृष्ठ–202
14. अंधारे भा.रा. अखेरचा तिसरे रघुजी भोसले सेनासाहेब सुभा (मराठी)–विश्वभारती प्रकाशन नागपूर–2003 पृष्ठ 136–139
15. अंधारे भा.रा. वही पृष्ठ –136